शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पर्यावरण के प्रति सजग कवयित्री : डॉ. पद्मा पाटील

डॉ.वंदना पाटिल
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
श्रीपतराव चौगुले आर्टस एंड कॉमर्स कॉलेज
मालवाड़ी – कोतोली
ति. पन्हाला, जिला कोल्हापुर
महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

मानव प्रारम्भ से ही पर्यावरण के प्रति रुचि रखना आया है। प्रारम्भ में मानव पूर्वरूप से पर्यावरण पर निर्भर रहता था। अत: उस मानव ने पर्यावरण के महत्त्व को समझकर उसकी रक्षा करने हेतु पर्यावरण के घटकों को देवता का रूप दिया। प्रकृति के उपादानों को मनुष्य ने अपने लिए वरदान माना। उसने प्रकृति के साथ संघर्ष का नहीं बल्कि समन्वय का रास्ता अपनाया। इस कारण साहित्य में भी पर्यावरण के प्रति चिंताएं जाहिर हुई हैं। आधुनिकीकरण की अंधी दौड़ के कारण आप पर्यावरण के सभी घटक संकट में हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में डॉ. पद्मा पाटील के काव्य में पर्यावरण के प्रति सजग भाव का विश्लेषण किया गया है।

मूल शब्द- पर्यावरण प्रकृति, प्राकृतिक, प्रदूषण, तलाश, कालिदास और भ्रमर, कादंबिनी, रत्नाकर, जल,पानी, वायु, तलाश

प्रस्तावना

वर्तमानकाल में मानव सुख सुविधाओं के पीछे लगने के कारण पर्यावरण का ह्रास होने लगा है और उसका गंभीर परिणाम मानव जीवन पर भी होने लगा है। अत: पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए सभी क्षेत्रों से प्रयास किए जा रहे हैं। इसी कारण यह छोटे बच्चों से लेकर संशोधकों तक सभी के अध्ययन का विषय बन गया है।

पर्यावरण की परिभाषाएँ-

'हमारे चारों ओर का वायुमंडल होनेवाले जीवधारी सब मिलकर पर्यावरण बनाता है।'[1]

'पर्यावरण का मतलब कसी व्यक्ति या वियशय की परिस्थिति, वातावरण'[2]

'पर्यावरण के अन्तरगत वे सभी बही दशाएँ तथा प्रभाव आते हैं जो मानव जीवन के विकास तथा वृद्धि को प्राभवित करते हैं। इसे ही साहित्य के क्षेत्र में प्राकृतिक, परिवेश कहा जाता है। जैसे- आकाश, जमीन, समुद्र, हवा, पानी, पत्थर, जीवजंतु, वनस्पतियाँ, पेड़-पौधे आदि।'[3]

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि पर्यावरण के अंतर्गत होनेवाले हर घटक का मानव जीवन में असाधरण महत्त्व है। साहित्यकारों ने प्राचीन काल से प्रकृति के सौदर्य का वर्णन अपने साहित्य में किया हुआ दिखाई देता है। परंतु आज पर्यावरण प्रदूषण के कारण प्राकृतिक सौदर्य नष्ट होने लगा है। प्रदूषण के कारण मानव जीवन पर होनेवाले गंभीर परिणामों को साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त करते हैं तथा उसके प्रति समाज में सजगता निर्माण करने का प्रयास करने लगे हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

डॉ. पद्मा पाटील के काव्य में पर्यावरण

डॉ. पद्मा पाटील जी एक संवेदनशील कवयित्री हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में अनेक सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया है। कवयित्री को पर्यावरण के प्रति अधिक लगाव होने के कारण उनकी 'कादंबिनी' कविता संग्रह में अधिकतर कविताएँ पर्यावरण प्रदूषण विषय को लेकर लिखी हुई हैं। कवयित्री पद्मा जी का 'कादंबिनी' कविता संग्रह इ. स. 1998 में प्रकाशित हुआ है।

कवयित्री 'कालिदास और भ्रमर' कविता में कालिदास के माध्यम से प्राचीन पर्यावरण सौंदर्य की तथा भ्रमर के माध्यम से हरे-भरे बगीचे के रंगीत सुंदर फूलों की याद दिलाकर आज के कृत्रिम बगीचे का वर्णन करके पर्यावरण का ह्रास बताने का प्रयास करती हैं -

'आज
वैसी हवा कहाँ ?
फूलों से लदे
उपवन
बाग-बगीचे
वनश्री
कहाँ ?' [4]

इन पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री कहना चाहती हैं कि प्राचीन काल जैसी शुद्ध बहनेवाली हवा आज नहीं रही है। फूलों से भरे उपवन, बाग-बगीचे वनश्री आज दिखाई नहीं देती है। इसका कारण एकमात्र मानव है। मानव ने आधुनिकता के नाम प्रकृति का रूप बिगाड़ डाला है। वहाँ पर सुख-सुविधा युक्त मकानों, कारखानों रास्तों की निर्मिति करके प्रकृति का सौंदर्य नष्ट कर दिया है।

कवयित्री को प्राकृतिक सौंदर्य से लगाव है। कृत्रिम सौंदर्य से उनका मन में दुखी होता है और वह लोगों के मन में पर्यावरण के प्रति सजगता निर्माण करने का प्रयास करती हैं।

"महकती हुई हवा
पड़ती है लेनी
इत्र - सेंट से
सूँघ कर
ताजगी के अलावा
बढ़ती है बेचैनी" [5]

कवयित्री को प्रकृति में खिले फूलों का सुगंध मन को आनंदी बना देता है। आज उस सुगंध की जगह पर सेंट का उपयोग किया जाने लागा है जिनसे मानव मन की भावनाएँ भी कृत्रिम बनने लगी है। विज्ञान की प्रगति के कारण आज बगीचे में विविध रंगों के फूल दिखाई नहीं देते हैं उसके बदले वहाँ पर सौंदर्य बढ़ाने के लिए रंगीले फव्वारें निर्माण किए गए हैं । लेकिन इस प्रकार का झूठा दिखावटी सौंदर्य का मानव जीवन में कुछ भी महत्त्व नहीं हैं।

कवयित्री को प्रकृति का सौंदर्य अधिक पसंद है। उसे देहात का हरा-भरा सौंदर्य पसंद है, महानगरों की चकाचौंध पसंद नहीं है। इसी बात के प्रति लोगों को सचेत करने के लिए कवयित्री 'रिश्ता' नामक कविता में पगडंडी और सड़क के माध्यम से शहर और देहात का वर्णन करती है। सड़क शहरी लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। शहर के लोग देहात के लोगों को अनपढ़ और मटमैले समझते हैं, परंतु उनके पास होनेवाला पर्यावरण संतुलन शहर के साफ-सुधरे, प्रगतिशील समझनेवाले लोगों के पास नहीं होता है। आज शहरों में वायु प्रदूषण बढ़ता जा रहा है-

"तुम ही हो बेजान
ये मोटरें-स्कूटर फैलते है प्रदूषण
फिर बन जाती हो तुम मटमैली
अस्मितवंचित-सी तुम" [6]

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कवयित्री कहती हैं कि शहरों कि सड़क धूल और मिट्टी से मटमैली नहीं है परंतु मोटरों के धुएँ के कारण मटमैली बनती जा रही है। मतलब देहात कि सड़क मिट्टी के कारण मटमैली होती है परंतु वहाँ पर प्रदूषण नहीं है। अत: कवयित्रीशहरी लोगों को स्वयं को प्रगतिशील समझने के कारण होनेवाले पर्यावरण प्रदूषण के प्रति सजग करने का काम करके सड़क और पगडंडी के बीच के रिश्ते को स्पष्ट करती है।

'रत्नाकर' नाम से जिस सागर को हम बुलाते हैं, वही सागर आज स्वयं को रत्नाकर न कहने को कहता है। उस सागर के मन की व्यथा कवयित्री अपनी 'निरर्थक' कविता में व्यक्त करती है। रत्नों का निर्माण करनेवाला, रत्नों से भरा हुआ सागर आज मानव के कारण कुडा-करकट से भरा हुआ है अत: वह आज स्वयं कहने लगा है-

"मुझे क्यों कहते हो रत्नाकर
मेरे भीतर का वडवानल
बुझ गया है
मनुष्य ने फेंके कूडे-करकट ने
उसे बुझाया है" [7]

पर्यावरण अपना स्वयं का संतुलन रखता है। परंतु मानव ही उसे दूषित कर देता है। नदी के उद्‌गम से समुद्र तक जाते समय बहती नदी कहीं जगहों से जाती है। लेकिन वह अपना शुद्ध रूप छोडती नही है। परंतु मानव ही अपना कूड़ा-करकट उसमें फेंक देती है और उसे अशुद्ध बनाते हैं। सागर के तल में कूड़ा-करकट भरा हुआ है। तब सागर कहता है कि जब गोताखोर रत्न निकालने के लिए गहराई में गोते लगाए तो उनके हाथ में आज रत्न नही आयेंगे तो उसके बदले गंदगी, प्रदूषणभरी धरातल का वेस्ट मटेरियल हाथ में आ जाएगा।

"लगाए गये गहराई में गोताख़ोरों ने गोते
नहीं हाथ आयेंगे उनके रत्न मेरे
उनके हाथों में आएगी
गंदगी, प्रदूषणभरी धरातल का वेस्ट माटेरियल
अब कहो मुझे रत्नाकर
क्यों ? मुकर गए ?" [8]

इस पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री कहना चाहती है कि जिसे हम रत्नाकर कहते हैं उसका रूप ही बिगड़ गया है। इस कविता में कवयित्री के संवेदनशील मन में पर्यावरण के प्रति होनेवाला दर्द दिखाई देता है। इसके प्रति लोगों को सचेत करती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार कवयित्री अपनी कविताओं के माध्यम से मानव जीवन में पर्यावरण -ह्रास के कारण आनेवाले संकट के प्रति सचेत करना चाहती है। प्राचीन काल में लोगों ने प्रकृति के हर घटक को देवता का रूप दिया था। क्योंकि उसके कारण मानव प्राकृतिक घटकों का - ह्रास नहीं करता था। जिससे प्राकृतिक सौन्दर्य रहता था और प्रदूषण की समस्या ही निर्माण नहीं होती थी। आज मानव अधिक से अधिक सुख सुविधाजनक जीवन के पीछे लगने के कारण अनेक पर्यावरण को बाधा पहुँचने वाली चीजों के उपयोग के पीछे लगा है, जिससे प्रकृति का मूल रूप नष्ट होने लगा है। पर्यावरण के प्रति डॉ.पद्मा पाटिल की चिंताएं वाजिब हैं। हमें हर स्तर पर पर्यावरण रक्षण का संकल्प लेने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 प्रसाद शुकदेव: पर्यावरण और हम, प्रभात प्रकाशन दिल्ली,संस्करण 1995 पृ. 67

2 सं चातक गोविंद :आधुनिक हिन्दी शब्दकोश, तक्षाशील प्रकाशन,दिल्ली प्रथम संस्करण 1986, पृ 197

3 अहिरराव : पर्यावरण विज्ञान, निराली प्रकाशन, पुना,
चतुर्थ संस्करण 1999 ,पृ. 15
4 डॉ. पाटील पद्मा, कादंबिनी (कविता संग्रह),कोल्हापुर
गंदबहार प्रकाशन,प्रथम संस्करण
1998 पृ. 17,
5 वही पृ. 17,
6 वही पृ. 39,
7 वही पृ. 55
8 वही पृ. 55